भारत-चीन सीमा: गश्त-पैटर्न विवाद और सीमा-प्रबंधन की दोहरी चुनौती

अंतरराष्ट्रीय संबंध / सीमा-प्रबंधन – आंतरिक (मुख्य परीक्षा: सामान्य अध्ययन-III) | समाचार संदर्भ: 23 अक्टूबर 2026 (विदेश मंत्रालय ब्रीफिंग) | प्रकाशित: 24 अक्टूबर 2026



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

खबरों में क्यों

23 अक्टूबर 2026 को विदेश मंत्रालय (MEA) के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने द्वि-साप्ताहिक ब्रीफिंग में कहा कि भारत-चीन सीमा क्षेत्रों में स्थिति "समय-समय पर तब बिगड़ती है जब चीनी बल स्थापित गश्त-पैटर्न से हटते हैं"। उन्होंने कहा कि दोनों पक्ष मौजूदा कूटनीतिक-सैन्य तंत्रों से मुद्दे सुलझा रहे हैं और वास्तविक नियंत्रण रेखा (Line of Actual Control — LAC) की समझ उपयुक्त क्षेत्रों में बेहतर बनाने के तरीकों पर चर्चा को सहमत हैं। यह बयान भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर की 22 अक्टूबर की उस टिप्पणी के बाद आया कि अरुणाचल प्रदेश में कई स्थानों पर चीनी सेना के साथ आमने-सामने की स्थितियाँ जारी हैं और बल की नई 'शौर्य' कमांडो टीमों ने इनका सामना किया।

पृष्ठभूमि

LAC की संरचनात्मक समस्या: वास्तविक नियंत्रण रेखा कोई अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंकित और द्विपक्षीय-स्वीकृत सीमा नहीं है; दोनों पक्षों की इसकी धारणा भिन्न है। भारत LAC की लंबाई लगभग 3,488 किमी मानता है, जबकि चीन इसे लगभग 2,000 किमी मानता है। इसलिए "गश्त-पैटर्न से विचलन" का आरोप केवल सेना-टकराव का नहीं, अंकित रेखा के अभाव का लक्षण है। चीन अरुणाचल प्रदेश को "दक्षिणी तिब्बत" कहकर दावा करता है; भारत उसे अपना अभिन्न अंग मानता है।

मौजूदा तंत्र और पूर्वी सेक्टर की नई चर्चा

कोर कमांडर-स्तरीय वार्ता, सीमा-मामलों पर कार्यकारी परामर्श एवं समन्वय तंत्र (WMCC), सीमा-कर्मी बैठकें और कूटनीतिक संपर्क तनाव को स्थानीय स्तर पर रोकने के साधन हैं। उल्लेखनीय है कि 6-7 सितंबर 2026 को पूर्वी सेक्टर की पहली कोर कमांडर-स्तरीय वार्ता हुई — वाछा (भारतीय पक्ष, अंजॉ ज़िला) और दमाई (चीनी पक्ष) पर — तकसिंग (ऊपरी सुबनसिरी) के तनाव के बीच। यह पूर्वी सेक्टर में संघर्ष-प्रबंधन के संस्थागतीकरण का संकेत है।

ITBP का अभिगम-परिवर्तन

24 अक्टूबर 1962 को गठित ITBP अब 'शौर्य' कमांडो टीमों का सभी सीमा-बटालियनों में विस्तार कर रहा है। महानिदेशक के अनुसार ड्रोन-संचालन, काउंटर-ड्रोन क्षमता, ड्रोन-पायलट प्रशिक्षण और स्वदेशी उत्पादन पर निवेश बढ़ रहा है, क्योंकि आधुनिकीकरण करते प्रतिद्वंद्वी के सामने पारंपरिक तरीके अपर्याप्त हैं।

विश्लेषण

संरचनात्मक कारण: (1) धारणा-अंतर: अंकित सीमा के अभाव में दोनों पक्षों की गश्त एक-दूसरे के दावा-क्षेत्र में प्रवेश करती है; (2) बुनियादी ढाँचा-दौड़: दोनों ओर सड़क-दूरसंचार विस्तार गश्त की पहुँच बढ़ाता है, जिससे संपर्क-बिंदु बढ़ते हैं; (3) भरोसेमंद सूचना का अभाव: घटनाओं का सार्वजनिक विवरण सीमित रहता है, जिससे अटकलों का क्षेत्र बढ़ता है। (विश्लेषणात्मक पठन — यह हमारी व्याख्या है, MEA का कथन नहीं: "पैटर्न से विचलन" का वाक्यांश स्थिति को नियंत्रण-सीमा के भीतर, परंतु समय-समय पर अस्थिर बताता प्रतीत होता है।)

चुनौतियाँ

सूचना-पारदर्शिता बनाम परिचालन-संवेदनशीलता का संतुलन; पूर्वी सेक्टर में पश्चिमी सेक्टर (लद्दाख) जैसा वार्ता-तंत्र अभी प्रारंभिक चरण में; तकनीकी आधुनिकीकरण की गति बनाम बजट-प्रशिक्षण बाधाएँ; द्विपक्षीय संबंधों के सुधार की सीमा-शांति पर निर्भरता।

आगे का रास्ता

LAC-स्पष्टीकरण वार्ता को गति (जैसा दोनों पक्ष सहमत हुए); निगरानी-तकनीक (ड्रोन, सेंसर) का एकीकरण; स्थानीय घटना-प्रबंधन प्रोटोकॉल का सुदृढ़ीकरण; घटनाओं की सत्य और समयबद्ध जानकारी।

निष्कर्ष

सीमा पर तनाव नया नहीं, पर उसका प्रबंधन अब पूर्वी सेक्टर तक संस्थागत हो रहा है। भारत की रणनीति परिचालन-तत्परता और कूटनीतिक संलग्नता के संयोजन पर टिकी है — किसी एक के कमजोर होने से दूसरा अर्थहीन हो जाता है।

मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

(सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-3, सीमा-प्रबंधन) "अंकित सीमा के अभाव में भारत-चीन सीमा पर तनाव का प्रबंधन नियमित चुनौती है। मौजूदा सीमा-प्रबंधन तंत्रों की समीक्षा कीजिए और तकनीकी आधुनिकीकरण की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।"

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: LAC की अलग-अलग धारणाओं और द्विपक्षीय रूप से अंकित सीमा के अभाव को तनाव-प्रबंधन की मूल चुनौती के रूप में रखें।

मुख्य भाग में: कोर कमांडर वार्ता, WMCC, सीमा-कर्मी बैठकों और कूटनीतिक संपर्क की भूमिका की समीक्षा करें। वाछा-दमाई वार्ता से पूर्वी सेक्टर में तंत्र के विकास का संदर्भ दें। ड्रोन, काउंटर-ड्रोन, प्रशिक्षण और शौर्य टीमों की परिचालन उपयोगिता के साथ बजट, प्रशिक्षण और सूचना-संवेदनशीलता की सीमाएँ रखें। LAC की अलग लंबाई-धारणाओं को सर्वस्वीकृत आँकड़ा न बनाएँ।

निष्कर्ष में: तकनीकी तत्परता को संवाद का विकल्प न मानते हुए LAC-स्पष्टीकरण, स्थानीय घटना-प्रबंधन और कूटनीतिक संलग्नता के संयुक्त रास्ते का सुझाव दें।

सीमाएँ और सावधानियाँ

तीन बातें संयत रखें। पहली, घटनाओं का सार्वजनिक विवरण सीमित है — दोनों पक्ष परिचालन-संवेदनशीलता से पूरी जानकारी नहीं देते; आमने-सामने की स्थितियों का वर्णन आधिकारिक बयानों तक ही सीमित रखा गया है। दूसरी, LAC की लंबाई-धारणा (लगभग 3,488 बनाम लगभग 2,000 किमी) दोनों पक्षों के अलग मत हैं — कोई एक स्वीकृत आँकड़ा नहीं। तीसरी, यह लेख 22-23 अक्टूबर 2026 के बयानों और सितंबर 2026 की वाछा-दमाई वार्ता तक सीमित है; सीमा-स्थिति तेजी से बदल सकती है।

स्रोत

- आकाशवाणी (newsonair.gov.in/india-china-agree-to-discuss-ways-to-improve-understanding-of-lac-for-better-border-management-mea/)।
- The Hindu (thehindu.com/news/national/mea-india-china-lac-border-situation-itbp-dg-remarks-arunachal/article71616229.ece)।
- ITBP आधिकारिक (itbpolice.nic.in/Home/history_role)।
- The Indian Express Explained (LAC लंबाई-धारणा)।